IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# घरेलू श्रम का लिंग आधारित विभाजन एवं कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ का समाजशास्त्रीय अध्ययन

कु . प्रगति पाण्डेय (शोध छात्रा),समाजशास्त्र विभाग

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी,उत्तर प्रदेश

प्रो अमिता सिंह, समाजशास्त्र विभाग

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी,उत्तर प्रदेश।

**सारांश**

आधुनिक समाज में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी निरंतर बढ़ रही है। इसके बावजूद घरेलू श्रम का विभाजन अभी भी मुख्यतः लिंग आधारित बना हुआ है। कामकाजी महिलाएं एक ओर आर्थिक गतिविधियों में योगदान देती हैं, वहीं दूसरी ओर घरेलू कार्यों की प्रमुख जिम्मेदारी भी निभाती हैं। इस प्रकार उन्हें "दोहरे बोझ" (Double Burden) की स्थिति का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य घरेलू श्रम के लिंग आधारित विभाजन तथा कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है।

यह अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली और एक केस स्टडी के माध्यम से प्राप्त किए गए हैं, जबकि द्वितीयक आंकड़े सरकारी रिपोर्टों, पुस्तकों, शोध-पत्रों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों से प्राप्त किए गए हैं। अध्ययन में पाया गया कि घरेलू कार्यों का असमान वितरण महिलाओं के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक जीवन को प्रभावित करता है। पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना, पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएं तथा अवैतनिक घरेलू श्रम की उपेक्षा इस समस्या के प्रमुख कारण हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद घरेलू जिम्मेदारियों में अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया है। अंततः शोध में लैंगिक समानता, घरेलू कार्यों के साझा उत्तरदायित्व तथा सामाजिक चेतना के विकास पर बल दिया गया है।

**मुख्य शब्द :** घरेलू श्रम, लिंग आधारित विभाजन, दोहरा बोझ, कामकाजी महिलाएं, पितृसत्ता, अवैतनिक श्रम।

## प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका परंपरागत रूप से घरेलू क्षेत्र तक सीमित मानी जाती रही है। परिवार की देखभाल, बच्चों का पालन-पोषण, भोजन बनाना, सफाई करना तथा परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करना महिलाओं का प्राथमिक

कर्तव्य माना गया है। दूसरी ओर, पुरुषों को आर्थिक गतिविधियों और सार्वजनिक क्षेत्र से जोड़ा गया। इस प्रकार समाज में श्रम का विभाजन लिंग के आधार पर निर्धारित किया गया।

आधुनिकता, औद्योगिकीकरण, शिक्षा तथा वैश्वीकरण के प्रभाव से महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया है। आज महिलाएं शिक्षा, प्रशासन, चिकित्सा, राजनीति, शिक्षण तथा अन्य अनेक क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर

होने के बावजूद घरेलू कार्यों का बोझ अभी भी मुख्यतः महिलाओं पर ही है। परिणामस्वरूप महिलाएं घर और कार्यस्थल दोनों की जिम्मेदारियों को एक साथ निभाने के लिए बाध्य होती हैं। इसी स्थिति को "दोहरे बोझ" की संज्ञा दी जाती है।

दोहरे बोझ की समस्या केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी हुई है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था महिलाओं के घरेलू श्रम को स्वाभाविक मानती है तथा उसे आर्थिक महत्व नहीं देती। यही कारण है कि महिलाओं द्वारा किए गए घरेलू कार्यों को "अदृश्य श्रम" या "अवैतनिक श्रम" कहा जाता है।

आज भी अधिकांश परिवारों में पुरुषों की घरेलू कार्यों में भागीदारी सीमित है। महिलाएं नौकरी करने के बाद भी घर के कार्यों की मुख्य जिम्मेदारी निभाती हैं। इससे उनके स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति, व्यक्तिगत जीवन तथा करियर विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः घरेलू श्रम के लिंग आधारित विभाजन और दोहरे बोझ की समस्या का समाजशास्त्रीय अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

## साहित्य समीक्षा

घरेलू श्रम, लैंगिक असमानता तथा कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ पर अनेक समाजशास्त्रियों, नारीवादी चिंतकों तथा शोधकर्ताओं ने अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित प्रमुख साहित्य का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

- ओकले ऐन ने अपनी प्रसिद्ध कृति *The Sociology of Housework* में घरेलू कार्यों को महिलाओं की पारंपरिक भूमिका से जोड़ते हुए बताया कि घरेलू श्रम को समाज में स्वाभाविक महिला कर्तव्य माना जाता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि गृहकार्य महिलाओं के लिए केवल शारीरिक श्रम नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक श्रम भी होता है। ओकले के अनुसार घरेलू श्रम का असमान वितरण लैंगिक असमानता को बनाए रखता है।
- बोउवार द सिमोन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *The Second Sex* में कहा कि महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से 'दूसरा' (Other) माना गया है। समाज महिलाओं की पहचान को घरेलू भूमिकाओं तक सीमित कर देता है। उनके अनुसार पितृसत्तात्मक समाज महिलाओं की स्वतंत्रता को नियंत्रित करता है तथा उन्हें घरेलू दायित्वों में बांधकर रखता है।
- होश्चाइल्ड आर्ली रोशेल ने अपनी पुस्तक *The Second Shift* में कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ का विस्तृत विश्लेषण किया। उन्होंने बताया कि महिलाएं नौकरी करने के बाद भी घरेलू कार्यों की 'दूसरी पारी' निभाती हैं। यह स्थिति महिलाओं में तनाव, थकान तथा भूमिका संघर्ष को बढ़ाती है
- एल्सन डायन ने 'Unpaid Care Work' की अवधारणा के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि महिलाओं द्वारा किए जाने वाले देखभाल संबंधी कार्यों को आर्थिक महत्व नहीं दिया जाता। उन्होंने कहा कि महिलाओं का अवैतनिक श्रम अर्थव्यवस्था और समाज की निरंतरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

**भारतीय संदर्भ में अध्ययन** - भारतीय समाज में महिलाओं के घरेलू श्रम और दोहरे बोझ पर अनेक शोध किए गए हैं। विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया कि नौकरी करने के बावजूद महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारियां कम नहीं होतीं। National Sample Survey तथा Time Use Survey की रिपोर्टों में भी यह स्पष्ट हुआ है कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में घरेलू कार्यों में अधिक समय व्यतीत करती हैं।

- भारतीय समाजशास्त्री और मानवशास्त्री दुबे लीला ने भारतीय परिवार, पितृसत्ता तथा लैंगिक संबंधों का विस्तृत अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका को पारंपरिक मूल्यों और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के माध्यम से निर्धारित किया जाता है। दुबे के अनुसार बचपन से ही लड़कियों का समाजीकरण घरेलू

भूमिकाओं के अनुसार किया जाता है, जिसके कारण घरेलू कार्यों को महिलाओं का स्वाभाविक दायित्व माना जाने लगता है। लीला दुबे ने यह भी स्पष्ट किया कि परिवार की संरचना और सांस्कृतिक परंपराएं महिलाओं की स्थिति को

प्रभावित करती हैं। संयुक्त परिवारों में महिलाओं पर घरेलू जिम्मेदारियों का बोझ अधिक होता है, जबकि निर्णय लेने की शक्ति सीमित रहती है। प्रस्तुत अध्ययन में भी अधिकांश महिलाओं ने घरेलू कार्यों की मुख्य जिम्मेदारी स्वयं पर होने की बात स्वीकार की, जो दुबे के विचारों की पुष्टि करता है।

- मजूमदार  वीना ने भारतीय महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए बताया कि महिलाओं का श्रम अक्सर अदृश्य बना रहता है। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और सामाजिक अधिकारों पर बल दिया तथा यह स्पष्ट किया कि महिलाओं की वास्तविक मुक्ति के लिए घरेलू और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में समानता आवश्यक है ।
- भसीन कमला ने पितृसत्ता और लैंगिक असमानता पर व्यापक लेखन किया। उनके अनुसार समाज में महिलाओं और पुरुषों की भूमिकाएं जैविक नहीं बल्कि सामाजिक रूप से निर्मित होती हैं। घरेलू कार्यों को महिलाओं की जिम्मेदारी मानना पितृसत्तात्मक सोच का परिणाम है।
- अग्रवाल बीना ने महिलाओं के श्रम, संपत्ति अधिकार तथा लैंगिक असमानता पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। उनके अनुसार महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता केवल रोजगार प्राप्त करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन्हें परिवार और समाज में निर्णय लेने की शक्ति भी प्राप्त होनी चाहिए। अग्रवाल ने यह स्पष्ट किया कि घरेलू श्रम और देखभाल कार्यों में महिलाओं की असमान भागीदारी उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावित करती है। इनका  का मानना है कि यदि महिलाओं को संसाधनों, संपत्ति और निर्णय प्रक्रिया में समान भागीदारी मिले, तो परिवार में श्रम का विभाजन अधिक संतुलित हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में भी यह पाया गया कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के बावजूद महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारियां कम नहीं होतीं। यह स्थिति बीना अग्रवाल के विचारों की पुष्टि करती है।
- सुंदर नंदिनी और अन्य भारतीय अध्ययनों का योगदानभारतीय समाजशास्त्रीय अध्ययनों में यह पाया गया है कि आधुनिक शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ने के बावजूद घरेलू श्रम का विभाजन अभी भी असमान बना हुआ है। विशेष रूप से कामकाजी महिलाओं को नौकरी के साथ-साथ घरेलू जिम्मेदारियों का भी मुख्य भार उठाना पड़ता है।

उपरोक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि घरेलू श्रम का असमान विभाजन वैश्विक और भारतीय दोनों संदर्भों में एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या है। अधिकांश शोध इस बात की पुष्टि करते हैं कि महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ने के बावजूद घरेलू जिम्मेदारियों का मुख्य भार अभी भी महिलाओं पर ही केंद्रित है। प्रस्तुत अध्ययन भी इन्हीं निष्कर्षों की पुष्टि करता है।

## शोध अंतराल

घरेलू श्रम, लैंगिक असमानता तथा कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक अध्ययन किए गए हैं। अधिकांश अध्ययनों में महिलाओं की घरेलू जिम्मेदारियों, अवैतनिक श्रम तथा मानसिक तनाव की समस्या को रेखांकित किया गया है। नारीवादी विचारकों जैसे ऐन ओकले, आर्ली रसेल होश्चाइल्ड, डायन एल्सन

तथा भारतीय विद्वानों जैसे लीला दुबे और बीना अग्रवाल ने घरेलू श्रम और लैंगिक विभाजन की समस्या को विस्तार से स्पष्ट किया है।

हालांकि उपलब्ध साहित्य में कुछ महत्वपूर्ण शोध अंतराल दिखाई देते हैं:

1. अधिकांश अध्ययन शहरी उच्च वर्गीय महिलाओं पर केंद्रित रहे हैं, जबकि मध्यम वर्गीय तथा शिक्षण कार्य से जुड़ी महिलाओं पर अपेक्षाकृत कम अध्ययन किए गए हैं।
2. कई अध्ययनों में घरेलू श्रम के आर्थिक और सैद्धांतिक पक्षों पर बल दिया गया है, लेकिन कामकाजी महिलाओं के दैनिक अनुभवों और मानसिक तनाव के समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर सीमित ध्यान दिया गया है।
3. भारतीय संदर्भ में संयुक्त परिवार और एकल परिवार की संरचना के आधार पर महिलाओं के दोहरे बोझ की तुलना पर पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध नहीं हैं।
4. अधिकांश शोध द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित हैं, जबकि प्राथमिक आंकड़ों और केस स्टडी के माध्यम से महिलाओं के अनुभवों को समझने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत कम हैं।
5. वर्तमान समय में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, नौकरी और घरेलू जिम्मेदारियों को एक साथ निभाने वाली महिलाओं की स्थिति पर भी सीमित शोध उपलब्ध है।

प्रस्तुत अध्ययन उपर्युक्त शोध अंतरालों को ध्यान में रखते हुए कामकाजी महिलाओं, विशेष रूप से महिला शिक्षिकाओं, के घरेलू श्रम और दोहरे बोझ का प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

### अध्ययन के उद्देश्य

- घरेलू श्रम के लिंग आधारित विभाजन का अध्ययन करना।
- कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ की प्रकृति को समझना।
- घरेलू कार्यों में पुरुषों की भागीदारी का विश्लेषण करना।
- दोहरे बोझ के मानसिक, शारीरिक तथा सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करना।
- समस्या के समाधान हेतु समाजशास्त्रीय सुझाव प्रस्तुत करना।

### अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद की बांसडीह ब्लॉक के अंतर्गत छितौनी न्याय पंचायत बलिया के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षिकाओं पर केंद्रित है। अध्ययन हेतु कुल 20 महिला शिक्षिकाओं का चयन किया गया।

**शोध पद्धति** - प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

### प्राथमिक आंकड़े

प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली एवं छोटी केस स्टडी के माध्यम से प्राप्त किए गए। इसके अंतर्गत 20 कामकाजी महिलाओं, मुख्यतः बेसिक शिक्षिकाओं, से जानकारी प्राप्त की गई। उत्तरदाताओं से घरेलू श्रम, पारिवारिक सहयोग, मानसिक तनाव, व्यक्तिगत समय तथा दोहरे बोझ से संबंधित प्रश्न पूछे गए।

### द्वितीयक आंकड़े

द्वितीयक आंकड़े सरकारी रिपोर्टों, पुस्तकों, शोध-पत्रों, जर्नलों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों से प्राप्त किए गए। 1 लैंगिक अध्ययन और महिला अध्ययन से संबंधित स्रोतों का अध्ययन किया गया।

## प्रतिदर्श

अध्ययन के लिए सुविधाजनक प्रतिदर्श के माध्यम से 20 कामकाजी महिलाओं का चयन किया गया। अधिकांश उत्तरदाता विवाहित थीं तथा बेसिक में शिक्षण कार्य से जुड़ी थी।

## शोध उपकरण

- प्रश्नावली
- लिकार्ट स्केल
- केस स्टडी
- द्वितीयक स्रोतों का विश्लेषण

## सैद्धांतिक ढांचा

### नारीवादी सिद्धांत

नारीवादी दृष्टिकोण समाज में महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति और लैंगिक असमानता का विश्लेषण करता है। नारीवादी विचारकों के अनुसार घरेलू श्रम को सामाजिक और आर्थिक मान्यता नहीं दी जाती। महिलाएं परिवार के लिए महत्वपूर्ण कार्य करती हैं, लेकिन उन्हें इसके लिए आर्थिक प्रतिफल नहीं मिलता। नारीवादी सिद्धांत यह भी बताता है कि घरेलू श्रम का असमान वितरण पितृसत्तात्मक व्यवस्था को मजबूत करता है। महिलाओं को "देखभाल करने वाली" और पुरुषों को "आर्थिक प्रदाता" के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

**डायन एल्सन का 'Unpaid Care Work' सिद्धांत -** प्रसिद्ध अर्थशास्त्री और नारीवादी चिंतक डायन एल्सन (Diane Elson) ने महिलाओं द्वारा किए जाने वाले 'Unpaid Care Work' अर्थात अवैतनिक देखभाल कार्य की अवधारणा को विशेष महत्व दिया। उनके अनुसार महिलाएं परिवार और समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण श्रम करती हैं, जैसे बच्चों की देखभाल, भोजन बनाना, बुजुर्गों की सेवा तथा घरेलू प्रबंधन, लेकिन इस श्रम को आर्थिक गतिविधि के रूप में मान्यता नहीं दी जाती।

एल्सन का मानना है कि महिलाओं का यह अवैतनिक श्रम पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि महिलाएं यह कार्य न करें, तो समाज और अर्थव्यवस्था का संचालन कठिन हो जाएगा। इसके बावजूद घरेलू श्रम को 'स्वाभाविक महिला कर्तव्य' मानकर उसकी उपेक्षा की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन में भी अधिकांश महिलाओं ने स्वीकार किया कि नौकरी करने के बावजूद घरेलू कार्यों की मुख्य जिम्मेदारी उन्हीं पर रहती है। यह स्थिति एल्सन के सिद्धांत की पुष्टि करती है।

**पितृसत्ता -** पितृसत्तात्मक समाज में शक्ति और निर्णय लेने का अधिकार मुख्यतः पुरुषों के पास होता है। घरेलू कार्यों को महिलाओं का स्वाभाविक दायित्व माना जाता है। यही सोच घरेलू श्रम के असमान विभाजन को बनाए रखती है।

### भूमिका संघर्ष सिद्धांत

कामकाजी महिलाओं को एक साथ अनेक भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं—जैसे कर्मचारी, मां, पत्नी और गृहिणी। इन भूमिकाओं के बीच संतुलन बनाना कठिन होता है, जिससे तनाव और मानसिक दबाव उत्पन्न होता है।

**आर्ली रसेल होश्चाइल्ड का 'The Second Shift' सिद्धांत-** आर्ली रसेल होश्चाइल्ड (Arlie Russell Hochschild) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *The Second Shift* में बताया कि कामकाजी महिलाएं कार्यालय से लौटने के बाद भी घरेलू कार्यों की दूसरी पारी (Second Shift) करती हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाएं नौकरी के अतिरिक्त घरेलू कार्यों और बच्चों की देखभाल में अधिक समय व्यतीत करती हैं।

होश्चाइल्ड के अनुसार आधुनिक समाज में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ी है, लेकिन घरेलू कार्यों का समान विभाजन नहीं हो पाया है। परिणामस्वरूप महिलाएं शारीरिक और मानसिक रूप से अधिक बोझ का अनुभव करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में भी अधिकांश महिलाओं ने स्वीकार किया कि उन्हें अपने लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता तथा वे मानसिक तनाव महसूस करती हैं। यह स्थिति 'The Second Shift' सिद्धांत को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करती है।

**संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण** – यह दृष्टिकोण परिवार को समाज की महत्वपूर्ण संस्था मानता है। परंपरागत समाज में पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं को अलग-अलग निर्धारित किया गया। हालांकि आधुनिक समाज में यह व्यवस्था महिलाओं पर अतिरिक्त बोझ उत्पन्न करती है।

## घरेलू श्रम का अवधारणा

घरेलू श्रम से आशय उन कार्यों से है, जो परिवार के संचालन और सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किए जाते हैं। इसमें भोजन बनाना, सफाई करना, कपड़े धोना, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करना आदि शामिल हैं।

घरेलू श्रम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे सामान्यतः आर्थिक गतिविधि नहीं माना जाता, जबकि यह परिवार और समाज की निरंतरता के लिए अत्यंत आवश्यक है। महिलाओं द्वारा किए गए घरेलू कार्यों का आर्थिक मूल्यांकन नहीं किया जाता, जबकि ये कार्य परिवार की सामाजिक और आर्थिक संरचना को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

डायन एल्सन के अनुसार घरेलू श्रम और देखभाल कार्य समाज की 'care economy' का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। महिलाएं परिवार के पुनरुत्पादन (social reproduction) में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं, लेकिन उनके कार्य को आर्थिक मान्यता नहीं मिलती। यही कारण है कि घरेलू श्रम को अक्सर 'अदृश्य श्रम' या 'Unpaid Care Work' कहा जाता है।

घरेलू श्रम को अक्सर "अदृश्य श्रम" कहा जाता है, क्योंकि यह कार्य निरंतर होने के बावजूद औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त नहीं करता। इस कारण महिलाओं का श्रम समाज में कम महत्वपूर्ण माना जाता है।

## घरेलू श्रम का लिंग आधारित विभाजन

भारतीय समाज में घरेलू कार्यों को महिलाओं से जोड़कर देखा जाता है। बचपन से ही लड़कियों को घरेलू कार्यों का प्रशिक्षण दिया जाता है, जबकि लड़कों को बाहरी कार्यों के लिए तैयार किया जाता है। यही सामाजिकरण (Socialization) आगे चलकर लैंगिक भूमिकाओं को मजबूत करता है।

यद्यपि आधुनिक शिक्षा और शहरीकरण ने महिलाओं की स्थिति में सुधार किया है, फिर भी घरेलू कार्यों में पुरुषों की भागीदारी सीमित बनी हुई है। अधिकांश पुरुष घरेलू कार्यों को "महिलाओं का काम" मानते हैं।

घरेलू श्रम का यह असमान विभाजन महिलाओं पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न करता है। महिलाएं नौकरी के साथ-साथ घरेलू जिम्मेदारियां निभाती हैं, जबकि पुरुष मुख्यतः आर्थिक कार्यों तक सीमित रहते हैं। यही स्थिति महिलाओं के दोहरे बोझ का आधार बनती है।

## कामकाजी महिलाओं का दोहरा बोझ

दोहरे बोझ का अर्थ है कि महिलाएं नौकरी के साथ-साथ घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी भी निभाती हैं। आधुनिक समय में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ने के बावजूद घरेलू कार्यों का बोझ कम नहीं हुआ है।

- **कार्यस्थल और घरेलू जीवन में संतुलन-** कामकाजी महिलाओं को समय प्रबंधन की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ता है। उन्हें सुबह से देर रात तक लगातार काम करना पड़ता है।
- **मानसिक तनाव-** लगातार जिम्मेदारियों के कारण महिलाओं में तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याएं बढ़ जाती हैं।

- **शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रभाव-** आराम की कमी, अनियमित दिनचर्या और अधिक कार्यभार के कारण महिलाओं का स्वास्थ्य प्रभावित होता है।
- **व्यक्तिगत विकास में बाधा-** दोहरे बोझ के कारण महिलाओं को अपने व्यक्तिगत विकास, मनोरंजन और सामाजिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता।
- **करियर पर प्रभाव-** घरेलू जिम्मेदारियों के कारण कई महिलाएं अपने करियर में अपेक्षित प्रगति नहीं कर पातीं। उन्हें पदोन्नति, प्रशिक्षण और अतिरिक्त अवसरों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

## भारतीय संदर्भ में स्थिति

भारत में महिलाओं की श्रम भागीदारी बढ़ने के बावजूद घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी मुख्यतः उन्हीं पर है। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार महिलाओं की श्रम भागीदारी दर लगभग 25.5 प्रतिशत तथा विभिन्न श्रम सर्वेक्षणों के अनुसार महिलाओं की कार्यबल भागीदारी दर पुरुषों की तुलना में काफी कम रही है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि महिलाओं द्वारा किए जाने वाले घरेलू और देखभाल संबंधी कार्यों को औपचारिक श्रम के रूप में मान्यता नहीं दी जाती।

International Labour Organization (ILO) की रिपोर्ट *Care Work and Care Jobs for the Future of Decent Work* (2018) में भी यह बताया गया है कि महिलाएं विश्व स्तर पर पुरुषों की तुलना में अवैतनिक देखभाल कार्यों में कई गुना अधिक समय व्यतीत करती हैं। ILO के अनुसार घरेलू और देखभाल कार्यों का असमान वितरण महिलाओं की आर्थिक भागीदारी, रोजगार के अवसर और सामाजिक स्थिति को प्रभावित करता है।

भारत में महिलाओं की श्रम भागीदारी बढ़ने के बावजूद घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी मुख्यतः उन्हीं पर है। National Statistical Office (NSO) द्वारा प्रकाशित Time Use Survey 2019 के अनुसार भारतीय महिलाएं पुरुषों की तुलना में घरेलू एवं देखभाल संबंधी कार्यों में कई गुना अधिक समय व्यतीत करती हैं। रिपोर्ट के अनुसार महिलाएं प्रतिदिन औसतन लगभग 299 मिनट अवैतनिक घरेलू सेवाओं में व्यतीत करती हैं, जबकि पुरुषों द्वारा इस कार्य में अपेक्षाकृत बहुत कम समय दिया जाता है। यह आंकड़ा घरेलू श्रम के स्पष्ट लैंगिक विभाजन को दर्शाता है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिलाएं घरेलू कार्यों में पुरुषों की तुलना में अधिक समय व्यतीत करती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति और अधिक चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि वहां घरेलू कार्यों के साथ कृषि कार्यों की जिम्मेदारी भी महिलाओं पर होती है। शहरी क्षेत्रों में कामकाजी महिलाएं कार्यालय और घर दोनों की जिम्मेदारियां निभाती हैं।

वर्तमान समाज में भी यह धारणा प्रचलित है कि घरेलू कार्य महिलाओं की प्राथमिक जिम्मेदारी है। यही कारण है कि महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद घरेलू श्रम के विभाजन में अपेक्षित परिवर्तन नहीं आया है।

## प्राथमिक आंकड़ों का विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में 20 कामकाजी महिलाओं, मुख्यतः बेसिक शिक्षिकाओं, से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई। अध्ययन का उद्देश्य घरेलू श्रम के लिंग आधारित विभाजन तथा कामकाजी महिलाओं के दोहरे बोझ की स्थिति को समझना था

**तालिका 1 : उत्तरदाताओं की सामान्य जानकारी**

| क्रम संख्या | विवरण | वर्गीकरण | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|---|---|
| **1** | आयु | 20–30 वर्ष | 3 | 15% |
| | | 31–40 वर्ष | 15 | 75% |
| | | 41–50 वर्ष | 2 | 10% |
| | | 50 वर्ष से अधिक | 0 | 0% |
| **2** | वैवाहिक स्थिति | विवाहित | 18 | 90% |
| | | अविवाहित | 2 | 10% |
| | | अन्य | 0 | 0% |
| **3** | परिवार का प्रकार | संयुक्त परिवार | 12 | 60% |
| | | एकल परिवार | 8 | 40% |

अध्ययन में शामिल महिलाओं में से अधिकांश (75%) की आयु 31–40 वर्ष के मध्य थी। 90% उत्तरदाता विवाहित थीं। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन मुख्यतः विवाहित कामकाजी महिलाओं पर आधारित है, जो परिवार एवं कार्यस्थल दोनों की जिम्मेदारियां निभा रही हैं।

**तालिका 2 : घरेलू श्रम की मुख्य जिम्मेदारी**

| विकल्प | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| **महिला** | 12 | 60% |
| **पुरुष** | 0 | 0% |
| **दोनों** | 7 | 35% |
| **उत्तर नहीं** | 1 | 5% |
| **कुल** | 20 | 100% |

अध्ययन में 60% उत्तरदाताओं ने बताया कि घरेलू कार्यों की मुख्य जिम्मेदारी महिलाओं पर होती है। किसी भी उत्तरदाता ने पुरुषों को मुख्य जिम्मेदार नहीं माना। इससे स्पष्ट होता है कि घरेलू श्रम का विभाजन अभी भी लिंग आधारित है।

**तालिका 3 : परिवार के पुरुष सदस्यों का सहयोग**

| विकल्प | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| हाँ | 9 | 45% |
| नहीं | 8 | 40% |
| कभी-कभी | 3 | 15% |
| कुल | 20 | 100% |

45% महिलाओं ने माना कि परिवार के पुरुष सदस्य सहयोग करते हैं, जबकि 40% महिलाओं ने सहयोग न मिलने की बात कही। इससे स्पष्ट होता है कि कुछ परिवारों में सहयोग की प्रवृत्ति बढ़ रही है, लेकिन पूर्ण समानता अभी स्थापित नहीं हुई है।

**तालिका 4 : नौकरी और घरेलू कार्यों के बीच संतुलन**

| विकल्प | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| हाँ | 9 | 45% |
| नहीं | 11 | 55% |
| कुल | 20 | 100% |

45% महिलाओं ने माना कि नौकरी और घरेलू कार्यों के बीच संतुलन बनाना कठिन है। यह स्थिति महिलाओं के दोहरे दायित्वों को दर्शाती है। ILO की रिपोर्टों के अनुसार घरेलू और देखभाल कार्यों का असमान वितरण महिलाओं के लिए 'time poverty' अर्थात समय की कमी की स्थिति उत्पन्न करता है, जिससे उनके स्वास्थ्य, रोजगार और व्यक्तिगत विकास पर प्रभाव पड़ता है।

**तालिका 5 : मानसिक तनाव की स्थिति**

| विकल्प | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| हाँ | 16 | 80% |
| नहीं | 4 | 20% |
| कुल | 20 | 100% |

80% उत्तरदाताओं ने मानसिक तनाव महसूस होने की बात स्वीकार की। इससे स्पष्ट होता है कि घरेलू एवं व्यावसायिक दायित्वों का संयुक्त दबाव महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

**तालिका 6 : व्यक्तिगत समय की उपलब्धता**

| विकल्प | उत्तरदाताओं की संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| हाँ | 0 | 0% |
| नहीं | 20 | 100% |
| कुल | 20 | 100% |

सभी महिलाओं ने स्वीकार किया कि उन्हें अपने लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। यह निष्कर्ष दोहरे बोझ की समस्या को अत्यंत स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

**तालिका 7 : Likert Scale आधारित विश्लेषण**

**घरेलू कार्यों की मुख्य जिम्मेदारी आप पर होती है**

| प्रतिक्रिया | संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| पूर्णतः सहमत | 10 | 50% |
| सहमत | 5 | 25% |
| अनिश्चित | 4 | 20% |
| असहमत | 1 | 5% |
| पूर्णतः असहमत | 0 | 0% |

अधिकांश महिलाएं इस कथन से सहमत थीं कि घरेलू कार्यों की मुख्य जिम्मेदारी उन्हीं पर होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं पर घरेलू श्रम का भार अधिक है।

**परिवार के पुरुष घरेलू कार्यों में पर्याप्त सहयोग करते हैं**

| प्रतिक्रिया | संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| पूर्णतः सहमत | 9 | 45% |
| सहमत | 7 | 35% |
| अनिश्चित | 0 | 0% |
| असहमत | 0 | 0% |
| पूर्णतः असहमत | 4 | 20% |

कुछ महिलाओं ने पुरुषों के सहयोग को स्वीकार किया, लेकिन 20% महिलाओं ने पूर्णतः असहमति व्यक्त की। इससे स्पष्ट होता है कि घरेलू कार्यों में पुरुषों की भागीदारी अभी भी सीमित है।

**नौकरी और घरेलू कार्यों के बीच संतुलन बनाना कठिन होता है**

| प्रतिक्रिया | संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| पूर्णतः सहमत | 4 | 20% |
| सहमत | 8 | 40% |
| अनिश्चित | 3 | 15% |
| असहमत | 2 | 10% |
| पूर्णतः असहमत | 3 | 15% |

अधिकांश महिलाओं ने स्वीकार किया कि नौकरी और घरेलू जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना कठिन होता है। यह महिलाओं के दोहरे दायित्वों को दर्शाता है।

**घरेलू कार्यों के कारण मुझे मानसिक तनाव महसूस होता है**

| प्रतिक्रिया | संख्या | प्रतिशत (%) |
|---|---|---|
| पूर्णतः सहमत | 2 | 10% |
| सहमत | 5 | 25% |
| अनिश्चित | 8 | 40% |

| | | |
|---|---|---|
| **असहमत** | 0 | 0% |
| **पूर्णतः असहमत** | 5 | 25% |

महिलाओं का एक बड़ा वर्ग मानसिक तनाव को स्वीकार करता है। यह दर्शाता है कि दोहरे बोझ का प्रभाव मानसिक स्तर पर भी पड़ता है।

---

| **मुझे अपने लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता** | | |
|---|---|---|
| **प्रतिक्रिया** | **संख्या** | **प्रतिशत (%)** |
| **पूर्णतः सहमत** | 17 | 85% |
| **सहमत** | 3 | 15% |
| **अनिश्चित** | 0 | 0% |
| **असहमत** | 0 | 0% |
| **पूर्णतः असहमत** | 0 | 0% |

85% महिलाएं पूर्णतः सहमत थीं कि उन्हें अपने लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाएं अपने आराम और व्यक्तिगत विकास की उपेक्षा करने को मजबूर हैं।

| **समाज आज भी घरेलू कार्यों को महिलाओं की जिम्मेदारी मानता है** | | |
|---|---|---|
| **प्रतिक्रिया** | **संख्या** | **प्रतिशत (%)** |
| **पूर्णतः सहमत** | 11 | 55% |
| **सहमत** | 2 | 10% |
| **अनिश्चित** | 3 | 15% |
| **असहमत** | 4 | 20% |
| **पूर्णतः असहमत** | 0 | 0% |

अधिकांश महिलाओं का मानना था कि समाज आज भी घरेलू कार्यों को महिलाओं की जिम्मेदारी मानता है। यह पितृसत्तात्मक सोच को दर्शाता है।

| **आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बाद भी घरेलू जिम्मेदारियां कम नहीं होतीं** | | |
|---|---|---|
| **प्रतिक्रिया** | **संख्या** | **प्रतिशत (%)** |
| **पूर्णतः सहमत** | 9 | 45% |
| **सहमत** | 5 | 25% |
| **अनिश्चित** | 4 | 20% |
| **असहमत** | 2 | 10% |
| **पूर्णतः असहमत** | 0 | 0% |

अधिकांश महिलाओं ने माना कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के बावजूद घरेलू जिम्मेदारियों में कोई विशेष कमी नहीं आती।

| पुरुषों की घरेलू कार्यों में भागीदारी से महिलाओं का तनाव कम हो सकता है | | |
|---|---|---|
| **प्रतिक्रिया** | **संख्या** | **प्रतिशत (%)** |
| **पूर्णतः सहमत** | 17 | 85% |
| **सहमत** | 2 | 10% |
| **अनिश्चित** | 1 | 5% |
| **असहमत** | 0 | 0% |
| **पूर्णतः असहमत** | 0 | 0% |

अधिकांश महिलाओं ने माना कि यदि पुरुष घरेलू कार्यों में अधिक भागीदारी करें, तो महिलाओं का तनाव कम हो सकता है।

**केस स्टडी**

**सुषमा पाण्डेय (परिवर्तित नाम)**

सुषमा पाण्डेय, 35 वर्षीय बेसिक शिक्षिका हैं। उनके परिवार में सास-ससुर, पति और 4 वर्षीय पुत्र शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि उनका दिन सुबह 4 बजे से प्रारंभ होता है। वे सबसे पहले घर के कार्य करती हैं, बच्चे की देखभाल करती हैं और फिर विद्यालय जाती हैं। विद्यालय से लौटने के बाद भी उन्हें परिवार की देखभाल, भोजन बनाना तथा अन्य घरेलू कार्य करने पड़ते हैं।

इसके अतिरिक्त वे GIC Lecturer परीक्षा की तैयारी भी कर रही हैं। बच्चे के सो जाने के बाद या सुबह जल्दी उठकर वे अध्ययन के लिए समय निकालती हैं।

उन्होंने बताया कि सास की अस्वस्थता, बच्चे की देखभाल, विद्यालय के अतिरिक्त कार्य तथा स्वयं की पढ़ाई के कारण उन्हें मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। हालांकि उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि उनके सास-ससुर बच्चे की देखभाल में सहयोग करते हैं तथा पति भी कभी-कभी सहयोग कर देते हैं।

**विश्लेषण**

यह केस स्टडी स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि कामकाजी महिलाएं एक साथ अनेक भूमिकाएं निभाती हैं। परिवार का सीमित सहयोग होने के बावजूद घरेलू जिम्मेदारियों का मुख्य भार महिलाओं पर ही रहता है।

**अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष**

- घरेलू कार्यों की मुख्य जिम्मेदारी अभी भी महिलाओं पर केंद्रित है।
- पुरुषों की घरेलू कार्यों में भागीदारी सीमित है।
- कामकाजी महिलाएं मानसिक तनाव और थकान का अनुभव करती हैं।
- महिलाओं को अपने लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता।
- आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद घरेलू जिम्मेदारियों में विशेष कमी नहीं आती।
- समाज आज भी घरेलू कार्यों को महिलाओं की प्राथमिक जिम्मेदारी मानता है।
- पुरुषों की घरेलू कार्यों में भागीदारी महिलाओं के तनाव को कम कर सकती है।

## आगे की राह

1. **घरेलू कार्यों का समान विभाजन-** पुरुषों और महिलाओं दोनों को घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी साझा करनी चाहिए।

2. **लैंगिक समानता की शिक्षा-**विद्यालय और परिवार स्तर पर लैंगिक समानता के मूल्यों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

3. **कार्यस्थल पर सहयोगी नीतियां-** महिलाओं के लिए कार्य के लचीले घंटे , मातृतव सहयोग तथा बच्चों की देखभाल सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

4. **सरकारी नीतियां-**सरकार को कार्यशील महिला सहायता योजनए और चाइल्ड फैसिलिटीज़ को बढ़ावा देना चाहिए।

5. **सामाजिक चेतना का विकास-** मीडिया और शिक्षा के माध्यम से घरेलू कार्यों को केवल महिलाओं की जिम्मेदारी मानने वाली सोच को बदलना आवश्यक है।

## संदर्भ


- Beauvoir, S. de. (1953). *The Second Sex*. London: Vintage.
- Bhasin, K. (2000). *Understanding Gender*. New Delhi: Kali for Women.
- Dube, L. (1988). *On the Construction of Gender: Hindu Girls in Patrilineal India*. Economic and Political Weekly, 23(18), WS11–WS19.
- Dube, L. (1997). *Women and Kinship: Comparative Perspectives on Gender in South and South-East Asia*. New Delhi: United Nations University Press.
- Elson, D. (1995). *Male Bias in the Development Process*. Manchester: Manchester University Press.
- Hochschild, A. R., & Machung, A. (1989). *The Second Shift: Working Parents and the Revolution at Home*. New York: Viking.
- International Labour Organization. (2018). *Care Work and Care Jobs for the Future of Decent Work*. Geneva: ILO.
- Census of India. (2011). *Primary Census Abstract*. New Delhi: Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
- Mazumdar, V. (1974). *Towards Equality: Report of the Committee on the Status of Women in India*. New Delhi: Government of India.
- Oakley, A. (1974). *The Sociology of Housework*. New York: Pantheon Books.
- National Statistical Office. (2019). *Time Use in India Report 2019*. New Delhi: Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India.
- Agarwal, B. (1994). *A Field of One's Own: Gender and Land Rights in South Asia*. Cambridge: Cambridge University Press.
- United Nations. (2020). *Gender Equality and Women's Empowerment Report*. New York: United Nations.
- Benería, L. (2003). *Gender, Development and Globalization: Economics as if All People Mattered*. New York: Routledge.

- Desai, N., & Krishnaraj, M. (1987). *Women and Society in India*. New Delhi: Ajanta Publications.
- Government of India. (2020). *Women and Men in India Report*. Ministry of Statistics and Programme Implementation.

- Kabeer, N. (1994). *Reversed Realities: Gender Hierarchies in Development Thought*. London: Verso.
- Sharma, K. (2012). *Gender and Women's Studies in India*. Jaipur: Rawat Publications.